हँसी-खेल

लेखक

पण्डित सुदर्शनाचार्य्य, बी० ए०

प्रकाशक

'शिशु'-कार्य्यालय

प्रयाग

द्वितीय बार] १९३२ [मूल्य ।=)

प्रकाशक
'शिशु'-कार्य्यालय
प्रयाग

['शिशु'--पुस्तकमाला नं० ६]

* * *

पढ़ो, बढ़ो भारत-सन्तान !
हृदय धरो माता का ध्यान ॥
तुम ही पर आशा है मारी ।
मुख निरख भारत महतारी ॥

* * *

[सर्वाधिकार सुरक्षित]

प्रथम बार दिसम्बर १९२५ * द्वितीय बार दिसम्बर १९३२

मुद्रक
पं० सत्यवान! आचार्य्य
'शिशु'-प्रेस, प्रयाग

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ

विषय | | पृष्ठ

हँसी-खेल

परम पिता को सीस नवा कर ।
प्रेम सहित उनके गुन गाकर ॥
'हँसी-खेल' हम पढ़ें पढ़ावें ।
पढ़ लिख अपना ज्ञान बढ़ावें ॥
'हँसी-खेल' है बाल-खिलौना ।
देखो इसका रूप सलौना ॥

है कहानियाँ कैसी-कैसी।
पहले नहीं सुनी थी जैसी॥
है तसवीरें रङ्ग-रँगीली।
मन हरने वाली चटकीली॥
गद्य पद्य में खूब मजा है।
देखो, इसमें बड़ा मजा है॥
लेख खेल के भरे पड़े हैं।
कहीं अचम्भे बड़े-बड़े हैं॥
अब मत देर करो बस आओ।
पढ़ो पढ़ाओ, सुनो सुनाओ॥

— ० —

चोरी की मजा

शकरकन्द की खीर पका कर।
हनुमतसिंह ने धरी मजा कर॥
मन में सोचा अभी नहा कर।
खूब छकूँगा इसको खाकर॥

दो नटखट लड़के थे लखते ।
रहे टेर में मौका तकते ॥
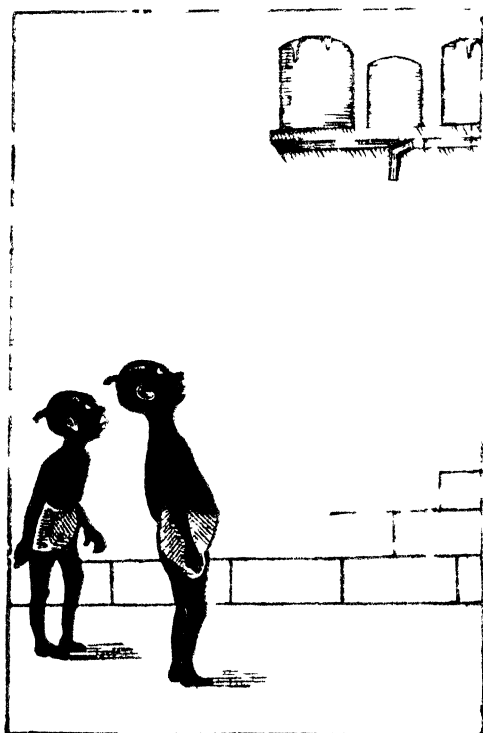
ज्यों ही हनुमत गया नहाने,
दोनों लड़के चले चुराने ॥

ऊँचे तख्ते पर थी खीर ।

लड़कों ने सोचा तदबीर ॥

चढ़ा एक के ऊपर एक ।

इसमें देर लगी ना नेक ॥

पड़ा बोझ नीचे वाले पर।
दबक गया वह कमर झुका कर॥

लटक रहा तब ऊपर वाला।
पड़ा विपत से उसका पाला॥

लुढ़का नखना बिखरी खीर।
भूल गई मारी तदबीर ॥

दोना सने खीर में ऐसे।
चित्र बीच है अङ्कित जैसे ॥

इतने में हनुमत घर आया ।
भूत समझ इनको भय खाया ॥
लगा सोचने फिर वह मन में ।
नहीं भूत यों फिरते दिन में ॥
रखने पर जब गई निगाह ।
मुँह से उसके निकली आह !
सारा भेद समझ में आया ।
मार तमाचे इन्हें भगाया ॥
कहो, खीर से कैसा मजा ।
खूब मिली चोरी की सजा ॥
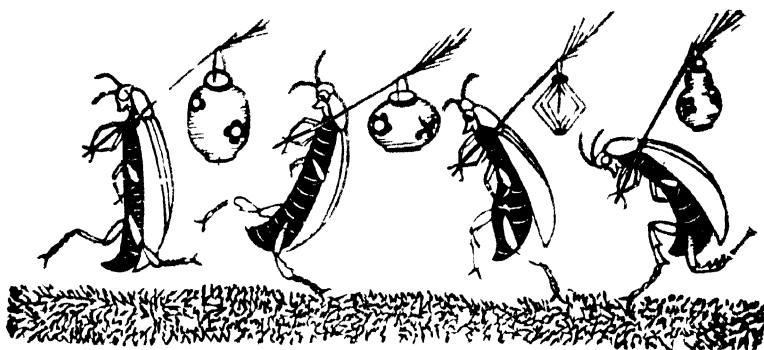
सच है भाई सच है

दो लड़कियाँ थीं। एक का नाम नन्नी और दूसरी का नन्दो था। एक रोज़ दोनों कहानी कहने बैठीं। दोनों में यह ठहरा कि कोई किसी की कहानी को झूठा न समझे, जो झूठा समझे वह दूसरी को अपनी सब गुड़ियाँ दे दे।

नन्नी कहने लगी—मेरी माँ जब अपने काले केश खोलती थी तो सूरज छिप जाता था।

नन्दो ने कहा—सच है भाई सच है। मगर मेरी माँ तुम्हारी माँ के केश कतर लेती थी और सूरज फिर निकल आता था।

नन्नी—सच है भाई सच है। मगर मेरी माँ तुम्हारी माँ की नाक पर एक घूँसा लगाती थी तो वह केश कतरना भूल जाती थी।

नन्दो—सच है भाई सच है। मगर मेरी

माँ के घूँसा नहीं लगता था। वह घूँसा तुम्हारी नाक पर आ बैठता था।

नन्नी—सच है भाई सच है। मगर मेरे घूँसा लगते ही तुम्हारी नाक टूट जाती थी।

नन्दो—सच है भाई सच है। मगर दर्द तुम्हारी ही नाक में होता था।

नन्नी—सच है भाई सच है। मगर आँसू तुम्हारी आँख से निकलते थे।

नन्दो—सच है भाई सच है। मगर मेरी आँख से आँसू इसलिये निकलते थे कि तुम मेरी गुड़िया चुरा ले गई थी।

नन्नी—सच है भाई सच है। मगर .

नन्दो—मगर रहने दो, सच है तो मेरी गुड़िया लाओ और झूठ है तो मुझे अपनी सब गुड़ियाँ दो।

नन्नी—गुड़ियाँ तो दूँगी ही मगर मेरी बात तो खतम हो जाने दो।

नन्दो—अच्छा, कहो।

नन्नी—एक बार और इसी प्रकार कहानी कही गई थी तो तुम हार गई थी, पर तुमने अपनी गुडियाँ मुझे आज तक न दी।

नन्दो—सच है भाई सच है।

नन्नी—तो फिर लाओ मेरी गुडियाँ!

दोनो लडकियाँ एक से एक चालाक थी। इसी समय उनकी अध्यापिका भी आ गई।

अध्यापिका ने कहा—जो बात झूठी है उसे सच मत कहो।

दोनो बोली—वाह! कहानी का नियम न टूट जायगा।

अध्यापिका—नियम नही टूटेगा। झूठ कहने वाले को अपनी सब गुड़ियाँ देनी पड़ेंगी सो दे दो।

नन्नी ने अपनी सब गुड़ियाँ नन्दो को दे दीं और नन्दो ने अपनी सारी गुड़ियाँ नन्नी को दे

दीं। अध्यापिका जी ने कहा—देखो, चाहे जो कष्ट उठाना पड़े और चाहे जो हानि सहनी पड़े पर सच को झूठ और झूठ को सच न कहो और न कोई नियम ही तोड़ो।

दोनों लड़कियों ने कहा—सच है भाई सच है।

अध्यापिका जी बोलीं—हाँ! इस बार जरूर सच है।

कहते हैं उन दोनों लड़कियों ने फिर कभी झूठ नहीं बोला, न सच्ची बात छिपाई और न कोई नियम ही तोड़ा।

ससुराल को
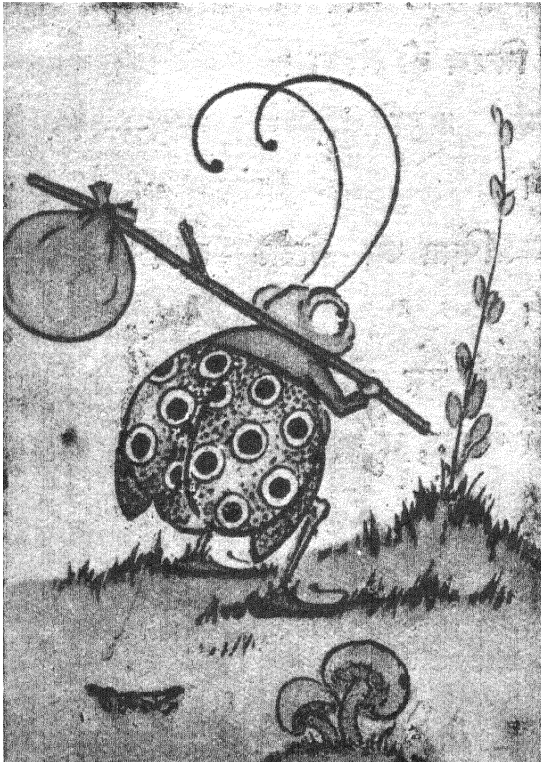
जा रहे हैं सेठ जी ससुराल को।
धन्य है इनकी अनोखी चाल को॥

बिलैया

झूला झूलै आज बिलैया।
मन में सोचे दूध मलैया॥
देखो कैसी शान जमाये।
दुम लटकाये बाल फुलाये॥
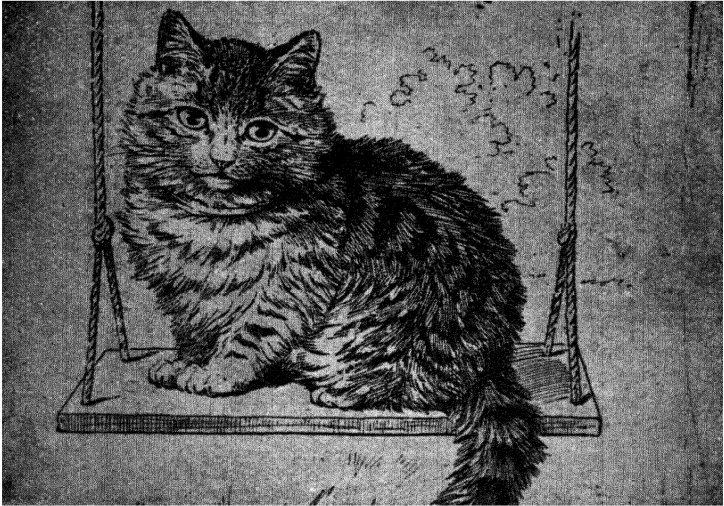
गुपचुप बैठी ध्यान लगाये।
चुहिया कहीं निकल जो आये।
फिर फुरती यह दिखलावेगी।
झपट उसे चट कर जावेगी॥

गुड़ियों का अस्पताल

अस्पताल गुडियों का खोला, मन्नू बना डाक्टर।
मुन्नी लेकर गुड़िया आई, उसको तोड-ताड़कर॥

"ओहो! सिर में बड़ी चोट है! लाओ मलहम जल्दी।"
घोल-घाल कर मुन्नी लाई, झटपट चूना-हल्दी॥

मन्नू ने सिर में गुड़िया के बाँधी मलहम पट्टी।
फिर बोला मुन्नी से "ले जा, अब यह हट्टी-कट्टी॥"

मुन्नी बोली, "वाह! टाँग तो इसकी जोड़ो भाई।"
झट मन्नू ने शीशी में से गोंद निकाल लगाई॥

टाँग जुड़ गयी, मन्नू बोला, "लाओ मेरी फीस।"
मुन्नी ने कागज के टुकड़े तभी दिये दस-बीस॥

—— ——

गुड़ियों का अस्पताल

अलियल घोला

है कैछा अलियल घोला।

घल ते बाहल,

मुजको लाकल।

तलने ने मुख मोला।

है कैछा अलियल घोला॥

पीछे आगे,

कईं न भागे।

तका माल मे कोला।

है कैछा अलियल घोला॥

नल-नल प्याले,

लाज दुलाले।

औल नला नल नोला।

है कैछा अलियल घोला॥

———

अलियल घोला

बालक कहता है—

"है कैछा अलियल घोला।"

सुग्गा मुग्गा

दूध उड़ाते भर-भर प्याले ।
हँसते रहते, बड़े निराले ॥
ये दोनों हैं भाई-भाई ।
इनमें कभी न हुई लड़ाई ॥

सुग्गा मुग्गा इनका नाम ।
सबको खुश रखना है काम ॥
सुग्गा बोले—सीताराम !
मुग्गा कहता—राधेश्याम !

टाऊँ, ठाऊँ, डाऊँ, म्याऊँ

एक सन्दूक में तीन छोटे-छोटे चूहे रहते थे। पहले का नाम टाऊँ, दूसरे का नाम ठाऊँ और तीसरे का डाऊँ था। टाऊँ सब में बड़ा और डाऊँ सब में छोटा था। एक दिन टाऊँ ने कहा—

"अगर न मैं घर एक बनाऊँ।
मेरा नाम न रखना टाऊँ॥"

उसी दिन ठाऊँ ने कहा—

"अगर न मैं घर एक बनाऊँ।
मेरा नाम न रखना ठाऊँ॥"

उसी दिन डाऊँ ने भी कहा—

"अगर न मैं घर एक बनाऊँ।
मेरा नाम न रखना डाऊँ॥"

उसी दिन तीनों चूहे घर बनाने चले। टाऊँ ने कहा, "मेरा घर घास का होगा क्योंकि मैं सर्दी गर्मी से डरता हूँ।"

ठाऊँ ने कहा, "मेरा घर कागज का होगा क्योंकि मैं पढ़ना लिखना बहुत पसन्द करता हूँ।"

डाऊँ ने कहा, "मेरा घर ईंट का होगा क्योंकि मैं किसी से डरना नहीं चाहता।"

तीनों चूहों ने अपने-अपने मन का घर बना लिया। एक बुड्ढा बिलार इन तीनों को बहुत दिनों से जानता था। उसने टाऊँ के दरवाजे पर आकर कहा—

"टाऊँ भैया! म्याऊँ! म्याऊँ!
क्या मैं घर के भीतर आऊँ?"

टाऊँ ने कहा, "तुम नहीं आ सकते।"

"कैसे नहीं आ सकता?" कहते हुए बिलार ने घास के ऊपर अपना पञ्जा रख कर टाऊँ को पकड़ लिया। बेचारा टाँऊँ टें! टें! करके रह गया। तब बिलार ठाऊँ के घर गया और बोला—

"ठाऊँ भैया! म्याऊँ! म्याऊँ!
क्या मैं घर के भीतर आऊँ?"

ठाऊँ ने कहा, "तुम नहीं आ सकते।"

"कैसे नहीं आ सकता?" कहते हुए बिलार ने ठाऊँ को भी कागज फाड़ कर पकड़ लिया। ठाऊँ ठें! ठें! कर के रह गया। तब बिलार डाऊँ के दरवाजे पर जाकर बोला—

"डाऊँ भैया! म्याऊँ! म्याऊँ!
क्या मैं घर के भीतर आऊँ?"

डाऊँ ने कहा, "आओ।"

पर बिलार अन्दर न घुस सका। तब वह फिर बोला—

"डाऊँ भैया! म्याऊँ! म्याऊँ!
बाहर निकलो मजा चखाऊँ॥"

डाऊँ ने जवाब दिया—

"म्याऊँ भैया! म्याऊँ! म्याऊँ!
अन्दर आओ मजा चखाऊँ॥

बड़ी देर तक इसी तरह बातचीत होती रही। पर डाऊँ बड़ा चालाक था। वह बाहर न निकला। बिलार को बड़ा गुस्सा आया। वह

टाऊँ और ठाऊँ को छोड़ कर डाऊँ का घर खोदने लगा। मौका मिलते ही टाऊँ और ठाऊँ भी भाग निकले। बिलार थक गया, पर डाऊँ का घर न खोद सका। लाचार होकर वह वापस चला गया। तब डाऊँ घर से बाहर निकला। उसने देखा कि टाऊँ और ठाऊँ का घर उजड़ा पड़ा है और वे दोनों डर के मारे एक झाड़ी में छिपे बैठे हैं। डाऊँ ने कहा—

"आओ ! टाऊँ ! आओ ! ठाऊँ !
अपने घर में तुम्हें सुलाऊँ ॥"

यह सुनकर दोनों उसके घर में चले आये और उसकी बड़ी बड़ाई करने लगे। कहते हैं जो लोग ईंट का मकान बनाते हैं वे डाऊँ के वंश के हैं।

विचित्र पत्र

श्री प्रयाग
ति०
प्रिय पाल
तुम्हारा आया मैं को
के भेजता हूँ। सको
प्रसाद को दे देना। मैं
बजे की मे
आऊँगा और तुमको और
एक लेता आऊँगा। और
के लिये और का
नाप भेज 2 तुम्हारा ता
V.M. Shawacidee
सिंह.
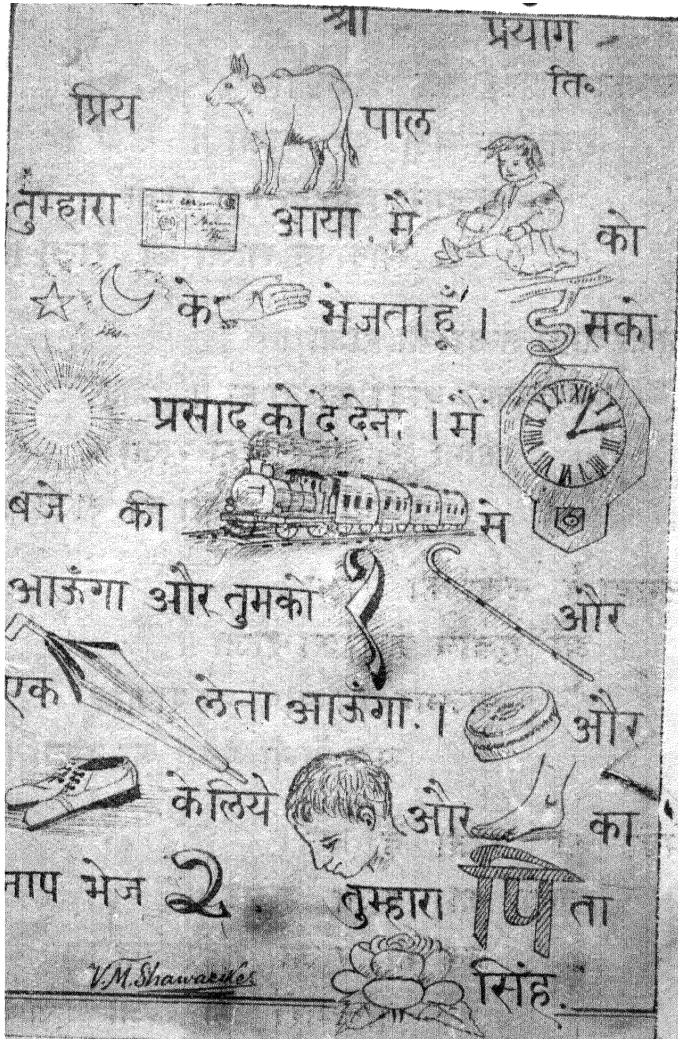
सब का राजा

लम्बोदर पेटों का राजा।
इकलौता बेटों का राजा॥
अलगोजा बाजों का राजा।
सादापन साजों का राजा॥

शकरकन्द कन्दों का राजा।
अलबेला बन्दों का राजा॥
काना है अन्धों का राजा।
मेवा सब धन्धों का राजा॥

लँगड़ा है लूलों का राजा।
औ' गुलाब फूलों का राजा॥
अजगर सब साँपों का राजा।
झूठ सभी पापों का राजा॥

पेड़ों का राजा है बट।
खेलों का राजा है नट॥
जल का राजा गङ्गा-जल।
हथियारों का राजा हल॥

भूतों का राजा है भय।
रोगों का राजा है क्षय॥
चौपायों का शेर-बबर।
कपड़ों का राजा खद्दर॥

बागों का राजा है बन।
काठों का राजा चन्दन॥
इस दुनिया का राजा धन।
उस दुनिया का हरि-चिन्तन॥

नालों में भोपाल-ताल।
शालों में कश्मीरी शाल॥
बालों में भालू का बाल।
लालों में माता का लाल॥

नालों में बैरगिया नाला।
जालों में मकड़ी का जाला॥
छालों में राजा मृग-छाला।
खेल कूद में आला-बाला॥

थल जीवों में राजा नर।
जल-जीवों में भूप मगर॥
चालाकों में नृप बन्दर।
और घरों में अपना घर॥

दाँतों मे हाथी का दाँत।
लातों मे बावन का लात॥
पत्तों में राजा है पान।
दुष्टों का राजा शैतान॥

तारों में है चन्द्र अनूप।
तीर्थों में प्रयाग है भूप॥
सभी फलों में राजा आम।
नामों में ईश्वर का नाम॥

पुजारियों में है महन्त जी, नमाजियों में मुल्ला।
मिठाइयों में खाकर देखो, राजा है रसगुल्ला॥
इसी तरह जितने राजा हैं, या हो सकते हैं।
अपने दल के राजा सब हैं, सब का राजा मैं॥

———

नये तानसेन

नया यह तानसेन आया।
अजब मुरचङ्ग बना लाया॥
अकड़ कर तान उड़ाता है।
परों से चोंच बजाता है॥

——

मोंहि गणित नहिं भावै

मैया ! मोंहि गणित नहि भावें ।

बाकी जोड़ लगावन बैठूँ
कबहूँ ठीक नहि आवै ॥

गुना बेगुना है कठोर अति
ठौर ठौर भुलवावै ।

त्रैराशिक से राशि मिले नहिं
नेक न मोंहि सुहावे ॥

भिन्न भिन-भिना नाम लेत ही
मन मेरा भिन्नावै ।

भाग सुनत ही बुद्धि बापुरी
कोसों लौं भगि जावै ॥

नहिं जानूँ वे कैसे बालक
जिनहि हिसाब सुहावै ।

मोकों एक खिलौना लैदे,
जातें जिया जुड़ावै ॥

मैया ! मोहिं गणित नहिं भावै।

अनोखा वैद्य
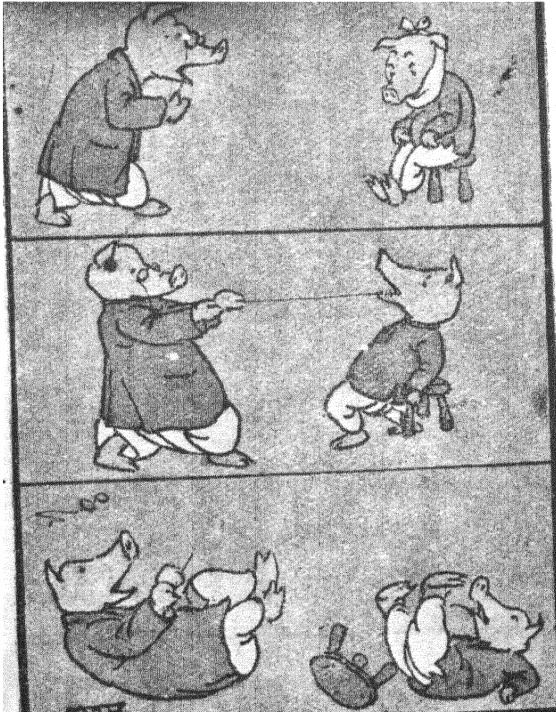
रोगी गया वैद्य के पास।
मुँह लटकाये बहुत उदास॥

"पीड़ा बड़ी दाँत में मेरे ।
करके थका जतन बहुतेरे ॥
तुम कुछ ऐसी जुगत बताओ ।
करो दवाई दुःख मिटाओ ॥"
कहा वैद्य ने, "डरो न भाई !
तुमने बहुत मिठाई खाई ॥
इससे लगा घीसने दाँत ।
खैर, नहीं कुछ डर की बात ।
अभी दर्द करता हूँ दूर ।
मगर फ़ीस लूँगा भरपूर ॥"
यों कह बाँध दाँत में डोर ।
तब वह लगा लगाने जोर ॥
तना-तनी हुई दोनों ओर ।
रोगी लगा मचाने शोर ॥
जोर लगाया वैद्य ने, जितना भी था वित्त ।
दोनों गिरे धड़ाम से, चारों खाने चित्त ॥
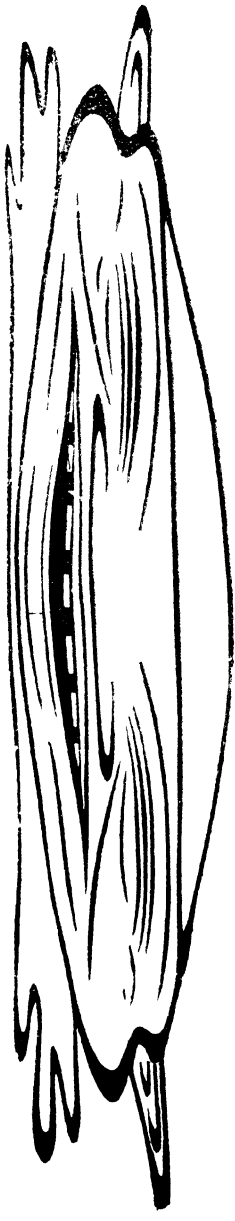
——

जानते हो मैं कौन हूँ ?

"ओहो, तुम मुझे नहीं जानते। मैं हँसोड़ हूँ। अच्छा, यदि मुझे जानना चाहो तो किताब की सतह आँख की सीध में ले जाओ और मुझे तिरछी निगाह से देखो।"

नये सवार ८

नौकर झपटा पकड़ लूं,
गिरने जाने सरकार गा'

घोड़े से भी तेज रईस।
गिरने को हो गये रईस॥
घबरा कर तब उससे बोले—
"घोड़े के तू पीछे हो ले॥"

———

भूल-भुलैया

आओ तो, इस मन्दिर में कैसे
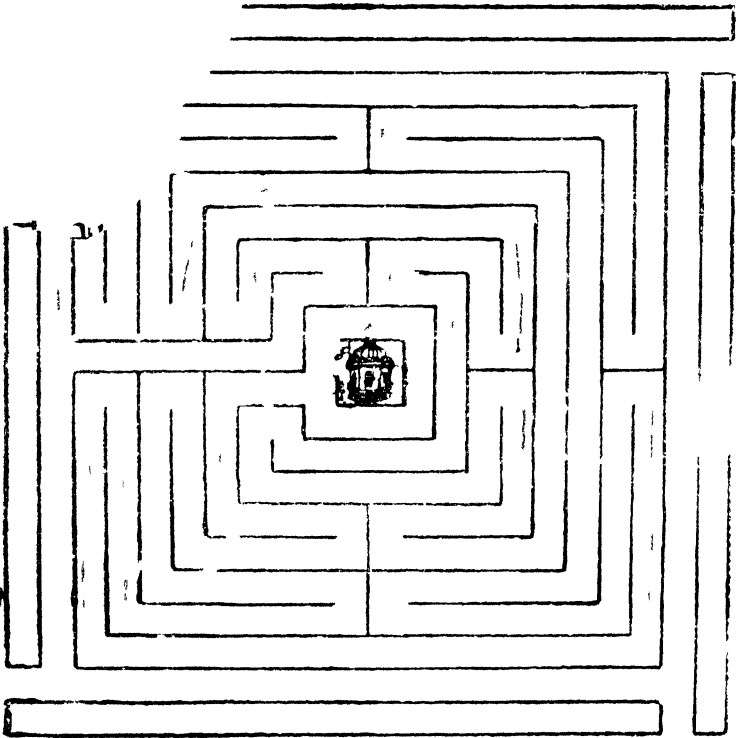
पहुँचोगे ? मन्दिर में तुम्हारे लिये लड्डू रखे हैं। रास्ता ढूँढ निकालो और वहाँ जाकर पेट भर लड्डू उड़ाओ।

चलती फिरती गेंद

"मेरी गेंद अब नहीं उछलती", यह कहते हुए सत्तो ने फर्श पर गेंद पटक दी। गेंद जहाँ गिरी थी बिना हिले डुले वहीं पड़ी रह गयी।

सत्तो फिर बोली, "जब नानी ने मुझे यह गेंद दी थी तब यह बिलकुल नयी थी। देखने में बड़ी सुन्दर लगती थी। मुझे याद है पहले-पहल मैंने जब इसे पटका तो यह उछल कर मेरी ठुड्डी में आ लगी, जिससे मेरी जीभ दाँतों के नीचे पड़ कर कट गयी थी। तभी से मैंने एक सूजा लेकर इसमें छेद कर इसका उछलना बन्द कर दिया है। अब यह जमीन पर लुढ़कती भी नहीं है।"

सत्तो के छोटे भाई का नाम नन्हें था। वह पास ही बैठा कागज की नाव बना रहा था। सत्तो की बातें सुन वह उसकी ओर देखते हुए हँसा

और बोला, "लाओ, मैं इसे ठीक कर दूँ, यह फिर आप से आप लुढ़कने लगेगी।"

सत्तो ने कहा, "नहीं, तू इसे नहा बना सकता।"

नन्हें ने उत्तर दिया, "अच्छा, ठहरो और देखो, मैं अभी बनाता हूँ।"

सत्तो ने नन्हें को गेंद दे दी और कहा—"ले, बना दे।" इतने ही में माता ने सत्तो को पुकारा। सत्तो उसके पास चली गयी।

इधर नन्हें ने एक बड़ी तमाशे की बात की। उसने चाकू से गेंद का थोड़ा सा हिस्सा काट दिया। एक चूहे का बच्चा उसके अन्दर घुसा कर गेंद सी दी।
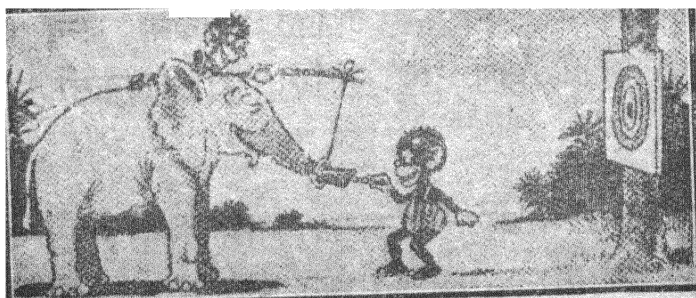
वाह! भाई वाह!! खूब—

थोड़ी देर में सत्तो दौड़ती हुई आई। उसने देखा—गेंद जमीन पर आप से आप लुढ़क रही है और नन्हें अपनी जेब में हाथ डाले बैठा हुआ मुसकुरा रहा है।

नन्हें बोला, "मैंने तुमसे कहा था न कि मैं गेंद को ठीक कर दूँगा। देखो, यह कैसी आप से आप चल रही है।"

सचमुच गेंद बड़ा अजब तरह स लुढ़क रही थी। एक बार इधर लुढ़की और फिर उधर गयी। एक जगह आध मिनट को रुक गयी। सत्तो उसे उठाने को झपटी, परन्तु वह फिर चलने लगी। एकाएक चूँ-चूँ की आवाज भी सत्तो को
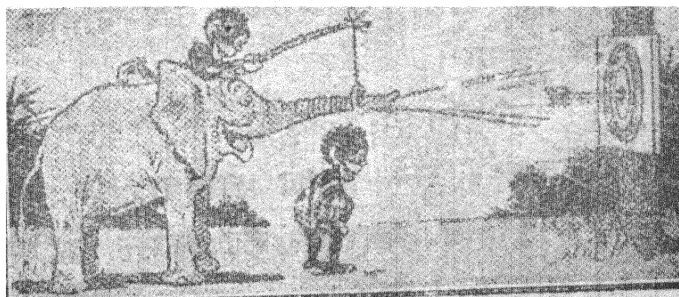
निशाना मारा ! हा-हा !!

सुनाई पड़ी। यह आवाज गेंद में से आती हुई मालूम हुई।

उसने बड़े विस्मय से नन्हे की ओर देखा। नन्हे खिलखिला कर हँस पड़ा। दौड़ कर वह गेंद उठा लाया और सन्तो के हाथ पर रख दी। गेंद फिर हाथ पर से लुढ़क कर फर्श पर गिर पड़ी। साथ ही चूँ-चूँ की आवाज भी बड़े जोर से निकली और गेंद एक ओर को भागने लगी। सन्तो ने दौड़ कर गेंद फिर उठा ली। इस बार उसने गेंद को अच्छी तरह पकड़ रक्खा था। उसने देखा कि नन्हे ने गेंद को चाकू से काटा है और उसके अन्दर एक छोटी चुहिया घुसा दी है। वह चुहिया उसमें से निकलने की बड़ी कोशिश कर रही है। सन्तो को उस चुहिया पर बड़ा तरस आया।

"तू बड़ा निर्दयी लड़का है," कहते हुए सन्तो ने गेंद के टाँके खोल चुहिया को बाहर निकाला। चुहिया घबरायी हुई कमरे के एक कोने की ओर भाग गयी।

——

सब की रानी

सूपनखा नकटों की रानी।
कूट-नीति कपटों की रानी॥
फाँसी सब दण्डों की रानी।
धर्म-ध्वजा झण्डों की रानी॥

आँख सभी अङ्गों की रानी।
हरियाली रङ्गों की रानी॥
चण्डी सब दङ्गों की रानी।
सत-संगति सङ्गों की रानी॥

त्योंहारों की रानी होली।
व्यवहारों की मीठी बोली॥
हथियारों की रानी गोली।
तस्वीरों की सूरत भोली॥

नहर स्वेज नहरों की रानी।
कटु भाषा जहरों की रानी॥
गंगा सब नदियों की रानी।
बीस-सदी सदियों की रानी॥

मेवा सब फलों की रानी।
सचाई धर्मों की रानी॥
मदिरा सब मद्यों की रानी।
चौपाई पद्यों की रानी॥
सब कपड़ों की रानी धोती।
सब शिक्षाओं की रानी पोथी॥
पकवानों की रानी पूड़ी।
है गहनों की रानी चूड़ी॥
गंगा की रानी है निर्मली।
शहरों की रानी है दिल्ली॥
बाजों की रानी सारंगी।
और फलों की है नारंगी॥
झाँसी की रानी वीरों में।
है पन्ना दाई धीरों में॥
सतियों की रानी है सीता।
गीतों की रानी है गीता॥
दाढ़ी में बकरे की दाढ़ी
मूँछों में टिड्डे की मूँछ।
फूलों में मनहार चमेली
पूँछों में लंगूर की पूँछ॥

इसी तरह जितनी रातें
है या हो सकती हैं।
अपने मन की रातें सब
है सब की रातों में ॥

उल्लू बनाने की सरल रीति

एक सफेद कागज पर एक दुअन्नी और एक चौअन्नी लेकर पेंसिल से चित्र १ की तरह दो गोले बनाओ। एक उल्लू का मुंह बनेगा और दूसरा
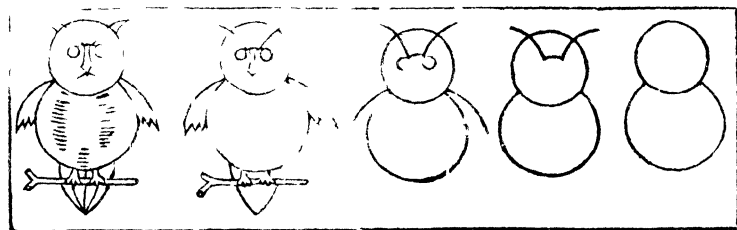
५ ४ ३ २ १

शरीर। फिर उसी में चित्र २, ३, ४, और ५ की तरह बनाते चले जाओ। अन्त (चित्र ५) में पूरा उल्लू बन जायगा।

औला-मौला

बादशाही जमाने की बात है, दिल्ली में दो मित्र रहा करते थे। दोनों की शकल सूरत एक ही सी थी और दोनों रहते भी पास ही पास थे। इनमें एक का नाम औला और दूसरे का मौला था।

दोनों मित्रों को मछली मारने और खाने का बड़ा शौक था। एक दिन बड़े सबेरे औला ने कहा, "मियाँ मौला, चलो मछली मार लाएँ, सुनते हैं आजकल जमुना में बड़ी मछलियाँ आई हैं।"

मौला ने हँस कर कहा, "चलो, मगर मैं तो रोहू मारता हूँ, अजी रोहू बड़ी जायकेदार होती है।"

इसके बाद दोनों मित्र औला-मौला एक-एक डण्डा, रस्सी, काँटा और टीन के छोटे डिब्बे में कुछ कीड़े, मछली रखने के लिये बाँस का सन्दूक इत्यादि लेकर चल पड़े। औला ने सोचा कुछ कलेवा करके चलें, मगर मौला ने बड़ी जल्दी मचाई और कहा, "चलो, देर मत करो, यही अच्छा समय है। थोड़ी देर में तो लौट आएँगे।"

दोनों मित्र बिना कुछ खाये पिये चल पड़े। वहाँ पहुँच जमुना के किनारे बैठ गए। डण्डों में डोर बाँधी, डोर में काँटा और काँटों में कुछ कीड़े पिरो कर पानी में फेंक दिये। पानी हिल उठा।

औला ने कहा, "मौला।"

मौला ने कहा, "रोहू।"

पानी हिल कर शान्त होगया और फिर न हिला। बैठे-बैठे तीन घण्टे हो गये। औला ने कहा, "बड़ी भूख लगी है।"

मौला ने कहा, "अच्छा है, रोहू बड़ी जायके-दार होती है, खूब खुल कर भूख लगने दो।"

इसी तरह दोनों आदमी बीच में कुछ बात कर लेते मगर ध्यान न टूटता। सूरज सिर पर आगया। औला ने कहा, "दोपहर हो गया।"

मौला ने कहा, "मुझे भी भूख लगी है, भाड़ में गई ऐसी रोहू।"

बातें करते-करते दोनों को कुछ सुस्ती सी जान पड़ी और नींद भी मालूम होने लगी। उसी समय पानी में मछली के तैरने की सी आवाज हुई।

औला-मौला दोनों आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगे। उन्होंने देखा कि एक मेढक जल के ऊपर आ रहा

औला-मौला दोनों आँख फाड़-फाड़ कर देखने लगे।

है और उसके गले में बड़ा ही सुन्दर रुमाल बँधा

है। मेंढक ने आते ही कहा, "मैं मेंढक-लोक से आ रहा हूँ। मेरा राजा मर गया है। आज उसकी अन्तिम क्रिया समाप्त हो जायगी। उसके बाद सबको
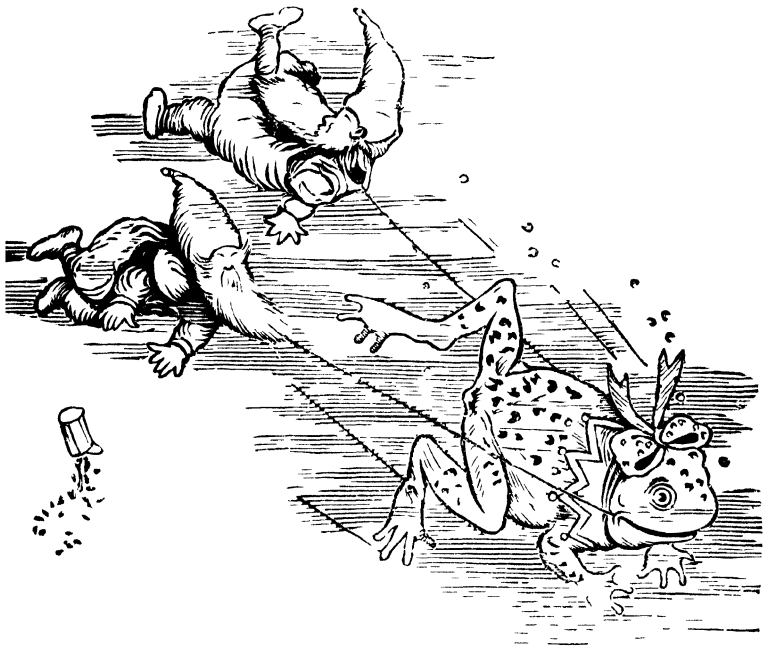
दावत दी जायगी। चलो, तुम लोग भी चलो। नाना प्रकार के भोजन बने हैं।" इसके बाद मेंढक ने औला की डोर उसके कोट से और मौला की उसकी दाढ़ी से बाँध दी और दोनों का सिरा

अपने मुँह में दबा कर फिर पानी में घुस पड़ा और तेज़ी से नीचे की ओर तैरने लगा। औला मौला घिसटने लगे।

पानी के नीचे मेंढक-लोक था। वहाँ बड़े सुन्दर सुन्दर महल बने थे। खूब चहल-पहल थी। औला मौला को देखते ही सब मेंढक चिल्लाने लगे। दोनों मित्र एक-एक सुन्दर सिंहासन पर बैठाए गये। चारों तरफ मेंढक ही मेंढक दिखाई पड़ते थे।

एक मेंढक ने चिल्ला कर कहा, "आज से औला मौला मेंढक-लोक के राजा हुए।" सब मेंढकों ने इस बात को टरटों-टरटों चिल्ला कर स्वीकार किया। इसके बाद एक दूसरे मेंढक ने मरे हुए राजा का गुणानुवाद करते हुए एक बड़ा व्याख्यान देना शुरू किया। औला-मौला ने कहा, "भाई पहले दावत खतम हो जाने दो। हम लोग बड़े भूखे हैं। अभी कलेवा तक नहीं किया।" मगर वहाँ कौन किसकी सुनता है। औला ने मौला के कान में कहा, "ऐसी दावत कभी न खाई होगी! मारे खुशबू के मेरी तो नाक फटी जाती है। न मालूम कब लेकचर खतम होगा।"

मौला ने कहा, "यार ! रोट्ट बनी है या नहीं, ज़रा सूँघो तो।"

औला ने कहा, "सैकड़ों रोट्ट बनी हैं। जरा धैर्य रक्खो, कितनी खाओगे ?"

लेक्चर खतम होगया। औला मौला दावत खाने के लिये सिंहासन से खड़े हुए। उसी समय कुछ गवैये आ पहुँचे और बोले, "हुजूर ! दावत के पहले कुछ गाना सुन लीजिये।"

औला मौला ने बिगड़ कर कहा, "नहीं सुनेंगे। दावत के बाद देखा जायगा ?" गाने वाले तो हट गये पर कुछ नाचने वाले आगये। वे हटाये ही न हटते थे। गुस्से में औला मौला लाल हो गये और चिल्ला कर उन्होंने उनसे हट जाने को कहा।

किन्तु अब दावत का सामान, महल इत्यादि सब गायब होगया था। औला-मौला दोनों ने एक दूसरे की गोद में एक-एक बड़ा मेंढक बैठा देखा। एक तीसरा मेंढक डिब्बे से कीड़े निकाल कर खा रहा था।

औला ने कहा, "दावत कहाँ चली गई ?"

मौला ने कहा, "क्या रोट्ट की भी बू नहीं

औला-मौला दोनों ने एक दूसरे की गोद में एक-एक बड़ा मेंढक बैठा देखा।

आती ?" मगर कुछ उत्तर न मिला। तीनों मेंढक

टरटों-टरटों करके पानी में कूद पड़े। औला ने आँख मलते हुए कहा, "बड़े नालायक मेंढक थे, मेरे तो सारे कपड़े खराब होगये।"

तीसरा पहर था। असल में दोनों मित्र दोपहर ही में सो गये थे और यह सब स्वप्न साथ ही साथ देखते रहे। नींद खुलने पर खाली हाथ घर लौटने के सिवाय और कोई तरकीब न थी। घर पहुँच कर दोनों ने खाना खाया, तब जान में जान आई। कहते हैं—उस दिन से औला मौला कभी मछली मारने नहीं गये।
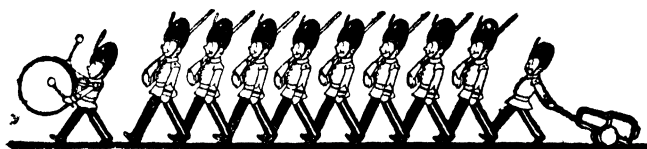
गुरू जी

कैसे बने गुरू महराज ?
हैं जा रहे मदरसे आज ॥
दिक करते हैं लड़के खूब ।
गये नौकरी से अब ऊब ॥

चोर का संकट

धर साँपों की पास पिटारी,
शाम हुई, सो गया मदारी।
निकला कोई चोर उधर से,
समझा सौदागर है भारी॥

खोल पिटारी डाली झटपट,
गये हाथ में साँप दो लिपट।
बजी मदारी की अब तुमड़ी,
बच्चो ! लखो चोर का सङ्कट॥

——

खिलाड़ी

गेंद नहीं है क्या परवाह !
होगा क्या न गेंद बिन ब्याह ?

जादू का तीर
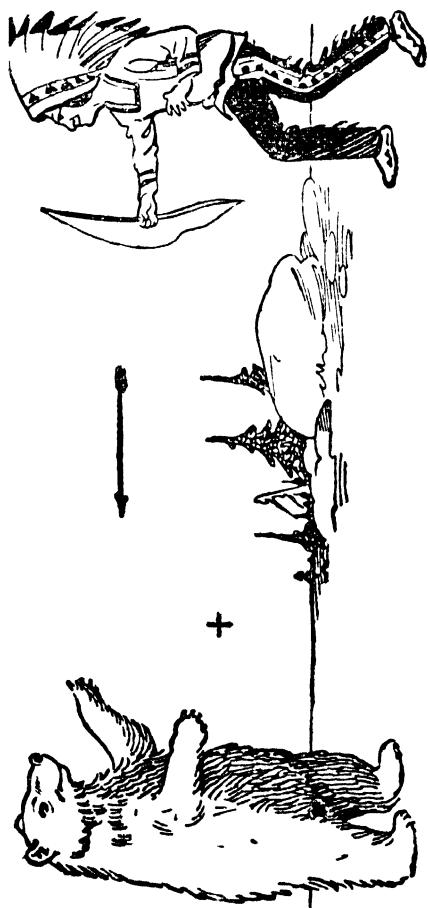
यह जादू का तीर है। यों तो यह भालू से अलग दिखाई पड़ता है, पर यदि तुम अपनी नाक की नोक को चित्र में बने हुए + निशान पर लेजाकर इसे देखो तो यह भालू के शरीर में आर पार छिदा हुआ दिखाई पड़ेगा।
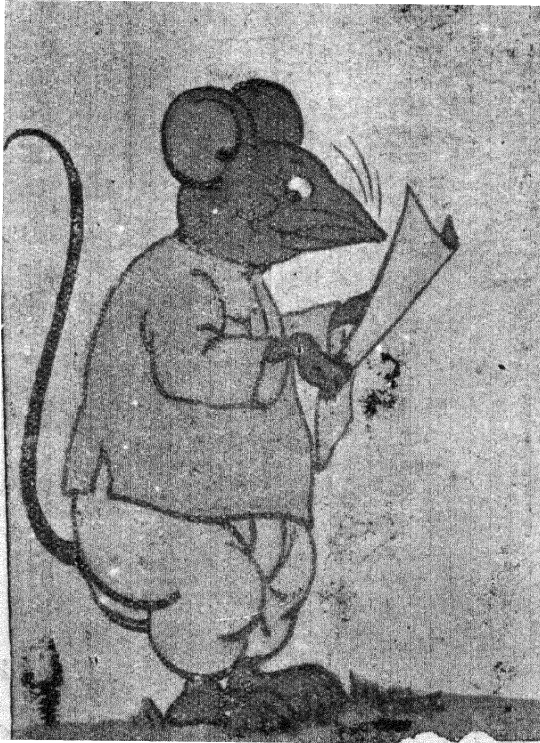
चूहे सरदार

बाबू बन चूहे सरदार।
देखो पढ़ते हैं अखबार॥
सोच रहे हैं बारम्बार।
दुम से लूँगा बिल्ली मार॥

———

बरसात में

जो ईश्वर है जल बरसाता ।
दिया उसी ने है यह छाता ॥
टरटों ! टरटों ! करो न लाला ।
मैं न कभी हूँ डरने वाला ॥

सैर को
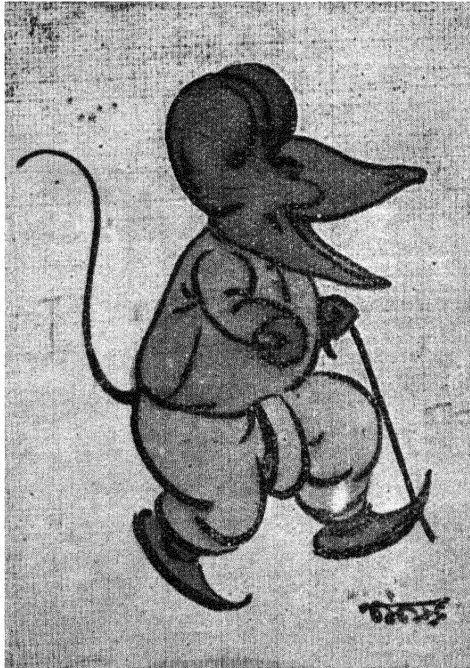
जाते हैं ये करने सैर।
उठते क्या तेजी से पैर॥
खोला है कैसा मुँह सुन्दर।
हवा खाएँगे या कुछ बन्दर॥

छोटे बाबू

खूब बरस ले बादल भैया
दबा पंख में छाता है।
बाबू बन कर टहल रहा हूँ
मजा बड़ा ही आता है॥

——

अनोखा दरजी

अहा हाहा ! ओहो हो हो !
अनोखा आ गया दरजी ।
अजी एक सूट बनवा लो
हमारी तो यही मरजी ॥

डरो मत देख कर कैंची
नहीं यह कान काटेगा ।
तुम्हारे सामने देखो
अभी यह सूट छाँटेगा ॥

तुम्हे बस देखते ही देखते
साहब बना दें हम ॥
कहो तो हैट औ' फुल बूट
का जोड़ा मँगा दें हम ॥

गिट-पिट गिट-पिट फिर बोलोगे

औ' खट-पट खट-पट दौड़ोगे ॥

बिसकुट कहीं देख लोगे तो

डिबिया सा मुँह खोलोगे ॥

——

बिगुलची भालू

भालू बना बिगुलची देखो,
कैसा बिगुल बजाता है।
बिगुल बजाकर सब पशुओं को,
प्रातःकाल उठाता है॥

॥ इति ॥

बाल-साहित्य

के सर्व-श्रेष्ठ प्रकाशक

'शिशु'-कार्य्यालय, प्रयाग

से प्रकाशित

'शिशु'-पुस्तकमाला की

सर्वोत्तम बालोपयोगी पुस्तकें

पुस्तकें क्या हैं—हँसी-खुशी का खज़ाना, उछल-कूद की पिटारी, शिक्षा की सन्दूकची और तन्दुरुस्ती की कुंजा है। इनको पाकर बच्चे प्रसन्न, नीरोग और विद्वान होते है।

'शिशु'-पुस्तकमाला की पस्तकें

१—माता के लाल (सचित्र)	|||)
२—बाल कवितावली (४ भाग) प्रति भाग	|)
३—हँसी-खेल (३५ चित्र)	|≈)
४—हँसी-खुशी (३५ चित्र)	|≈)
५—गुब्बारा (४५ चित्र)	|-)
६—चुन्नू मुन्नू (३२ चित्र)	≡)
७—दोनों भाई (३२ चित्र)	≡)
८—लम्पा चम्पा (२० चित्र)	≡)
९—उल्लू मल्लू (सचित्र)	|)
१०—हुक्का हुआ	|-)
११—नानी की कहानी (कविता, सचित्र)	|)
१२—तीसमारखां (कविता, सचित्र)	|)
१३—बच्चू का ब्याह (सचित्र)	|)
१४—लाल बुझक्कड़ (कविता, सचित्र)	||)
१५—परियों का देश (४ भाग) प्रति भाग	|)
१६—अजब देश	|≡)
१७—दस कथाये (सचित्र)	|≈)
१८—मगर मामा (सचित्र)	|)
१९—हाऊ और बिलाऊ (कविता)	|)
२०—विज्ञान-वाटिका (सचित्र)	|-)
२१—अन्धेर नगरी (सचित्र)	≡)

२२—खोपड़े सिंह (सचित्र) [illegible])

२३—बालक ध्रुव (सचित्र) |-)

२४—बालक प्रह्लाद (सचित्र) |=)

२५—रसभरी कहानियाँ |=)

२६—मनोहर कहानियाँ |=)

२७—मज़ेदार कहानियाँ |=)

२८—मनोरञ्जक कहानियाँ |=)

२९—अनूठी कहानियाँ |=)

३०—मीठी कहानियाँ |=)

३१—चटपटी कहानियाँ |=)

३२—अलबेली कहानियाँ |=)

३३—नवेली कहानियाँ |=)

३४—निराली कहानियाँ |=)

३५—शिकारियों की कहानियाँ |=)

३६—बालकों का शिष्टाचार |)

३७—तितली (सचित्र) ||)

३८—लाल-रामायण (सचित्र) १)

३९—लाल-कृष्ण (सचित्र) |||)

४०—लाल-महाभारत (सचित्र) १)

४१—लाल-कहानियाँ (कई भागों में) प्रति भाग |)

४२—बाबा भीष्म (सचित्र) |-)

४३—नीरोग बालक |)

४४—श्री[illegible]जादेवी (सचित्र) |)

भारतवर्ष मे

हिन्दी की बालोपयोगी पुस्तको

का

सबसे बड़ा, सबसे पुराना और सबसे प्रसिद्ध

प्रकाशक और विक्रेता

'शिशु'-कार्य्यालय, प्रयाग

ही है। यहाँ से

बालक-बालिकाओं के लिये जितनी अच्छी और सस्ती
सुन्दर और सरल, रोचक और उपयोगी, आकर्षक और
शिक्षाप्रद पुस्तकें प्रकाशित होती है उतनी और
कहीं से भी नहीं होतीं। इन पुस्तकों को
बच्चे बडे चाव से पढते और खुश होते
है। साथ ही साथ इनसे उन्हें कई
प्रकार की उपयोगी शिक्षा तथा
ज्ञान प्राप्त होता है।

शिशु' प्रेस, प्रयाग।